मालवा उत्सव

चर्चा में क्यों?

6 से 12 मई 2025 तक **इंदौर** के **लालबाग परिसर** में आयोजित **मालवा उत्सव** में **मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री** सम्मिलित हुए।

मुख्य बिंदु

- **मालवा उत्सव के बारे में:**

  - यह एक **पाँच दिवसीय सांस्कृतिक महोत्सव** था, जिसका संचालन **लोक संस्कृति मंच** द्वारा किया गया था।
  - यह उत्सव पिछले **25 वर्षों** से नियमित रूप से आयोजित किया जा रहा है।

- **उद्देश्य:**
  - **लोक संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण और प्रचार-प्रसार।**
  - **स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों को मंच और बाज़ार** उपलब्ध कराना।
  - **राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान** को बढ़ावा देना।
- **लोककलाओं और हस्तशिल्प की प्रदर्शनी**:

- इस उत्सव में देश के विभिन्न प्रदेशों तथा **मध्य प्रदेश** के अलग-अलग क्षेत्रों से आए **लोक कलाकारों** ने [लोकनृत्य](https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/malwa-festival) और संगीत प्रस्तुत किये।
- **बुनकरों** और **हस्तशिल्प कलाकारों** ने **बुनकरी, मिट्टी और धातु की कलाकृतियाँ** प्रदर्शित कीं।
- उत्सव में **भित्तिचित्र**, **रेजा कार्य**, **बटिक प्रिंट**, **ताँबे व पीतल की मूर्तियाँ** तथा **आदिवासी चित्रकला** विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं।

मध्य प्रदेश के लोक नृत्य

- **काठी**: यह बलाई समाज द्वारा किया जाने वाला नृत्य है, जिसमें मोर पंख से सजे वस्त्रों और बाँस की 'काठी' का प्रयोग होता है। यह नृत्य 'ढाक' वाद्य पर किया जाता है।

- **गणगौर**: चैत्र माह में महिलाएँ देवी पार्वती की पूजा करते हुए ताली और थाली पर नृत्य करती हैं। इसके दो रूप – थलरिया और थोला प्रसिद्ध हैं।
- **फाफरिया**: यह पुरुषों और महिलाओं द्वारा साथ में किया जाने वाला पुंगी की ध्वनि पर आधारित समूह नृत्य है।
- **मदाल्या**: इसमें महिलाएँ ढोल की थाप पर हाथ-पाँव की मुद्राओं के साथ तीव्र गति से नृत्य करती हैं।

- **आदा-खड़ा**: यह नृत्य विवाह, जन्म व मृत्यु जैसे अवसरों पर स्त्रियों द्वारा ढोल की थाप पर किया जाता है।

- **डंडा नृत्य**: यह चैत्र-वैशाख की रातों में पुरुषों द्वारा डंडे के साथ ढोल व थाली की ताल पर किया जाता है।

- **मटकी**: महिलाएँ सिर पर कई मटकियाँ संतुलित कर गोलाकार घुमते हुए ढोल की थाप पर नृत्य करती हैं। आड़ा-खड़ा इसका एक रूप है।
- **राई**: बेड़िया जनजाति द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य शृंगार व सामाजिक विषयों पर आधारित संवादात्मक रूप में होता है। राम सहाय पाण्डेय इसके प्रमुख कलाकार हैं।

- **सायरा**: वर्षा के लिये भगवान इंद्र की प्रार्थना स्वरूप यह नृत्य लाठी लिये युवाओं द्वारा ढोलक व बाँसुरी के साथ किया जाता है।

- **जवारा**: महिलाएँ सिर पर फसल की टोकरी रखकर संतुलन बनाते हुए यह नृत्य करती हैं, जो फसलों की महत्ता को दर्शाता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/malwa-festival